1 निर्मल ग्राम कल्याणपुर, जनपद पंचायत नरसिंहपुर, जिला पंचायत नरसिंहपुर

इस ग्राम के सरपंच श्री मोहन सिंह पटैल इससे हमेशा चिंतित रहते थे, और वे हमेशा ग्राम की तस्वीर एक स्वच्छ ग्राम के रूप में देखना चाहते थे। उक्त ग्राम की किस्मत बदलने का क्रम तब शुरू हुआ जब जिला प्रशासन द्वारा वर्ष 2007–08 के लिए ग्राम कल्याणपुर को निर्मल ग्राम पंचायत के लिए प्रस्तावित किया गया। सरपंच श्री मोहनलाल पटेल के लिए यह एक चुनौती भरा कार्य था। क्योंकि ग्राम में अधिकांशतः सभी लोग शौच के लिए बाहर जाया करते थे, उन्हें समझाना "लोहे के चने चबाने" जैसा कार्य था। अपने ग्राम को कैसे निर्मल बनाये, कैसे लोगों में जागृति लाये, बस इसी उधेड़बुन में लगे रहते थे। एकाएक उनका दिमाग दौड़ा और उन्होने जिला कलेक्टर व मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत के सामने अपनी समस्या रखी। फिर क्या था, एक के बाद एक ग्राम में अधिकारियों का दल आने लगा। स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता की बाते होने लगी। सरपंच द्वारा जिसका घर–आंगन गंदा दिखता, उसके घर में जाकर बोल देते कि भौजी, तुम्हारा घर आज कलेक्टर साहिब देखने आ रहे हैं, और वहां से निकल जाते। फिर क्या था, भौजी और भैया घर साफ करने में जुट जाते। इस तरह उस मकान एवं गली की साफ–सफाई होने लगती। ग्राम में अधिकारियों के दल के भ्रमण से लोगों में भी अपना घर–आंगन साफ करने की होड़ लग गई। सरपंच द्वारा घर–आंगन, साफ–सफाई के बाद ग्राम में स्वच्छ वातावरण एवं ग्राम को बाह्य शौच से मुक्त करने की थी। योजना की रूपरेखा के लिए फिर उन्होने जिला प्रशासन से मदद मांगी व ग्राम में एक सम्मेलन दिनांक 06.01.08 को आयोजित किया। जिसमें सभी पंचों एवं ग्रामवासियों से लेकर जिला प्रशासन शामिल हुआ। ग्रामवासियों के लिए यह एक अनोखा सम्मेलन था, जिसमें किसी की शादी न होकर ग्राम स्वच्छता के बारे में विस्तृत योजना रखी थी। सभी लोग शामिल हुए। जिसमें सरपंच ने जिला प्रशासनिक अधिकारियों व ग्रामवासियों के समक्ष अपनी समस्याएँ रखी। उन समस्याओं के निपटने का उपाय श्री मनीश सिंह जिला कलेक्टर नरसिंहपुर, श्री पी.एल. सोलंकी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, श्री राजेश तिवारी, जिला समन्वयक समग्र स्वच्छता अभियान के द्वारा सरपंच एवं ग्रामवासियों को अपने उद्‌बोधन द्वारा बताया गया।

योजना के कियान्वयन के लिए श्री पी.एल. सोलंकी मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत ने उपसंचालक पंचायत एवं सामाजिक न्याय विभाग के शासकीय कलापथक दल के कलाकारों का ग्राम पंचायत कल्याणपुर में कार्यक्रम प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया। कलापथक दल द्वारा सरपंच श्री मोहन सिंह पटैल से मुलाकात हुई और सरपंच द्वारा ग्रामवासियों की समझाईश के लिए ग्राम को सुंदर और स्वच्छ बनाने की परिकल्पना के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए कहा गया। तुरंत कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई और स्वच्छता एवं स्वच्छ शौचालय पर दल द्वारा एक सुंदर गीत प्रस्तुत किया गया जिसके बोल थे – गॉव की गलियॉ साफ रही तो, स्वस्थ्य रहोगे भैयाजी ,

घूरे–कीचड़ पास रहे तो, पस्त रहोगे भैयाजी
आंगन में तुलसी का बिरवा, घर–घर में फुलवारी हो
नाली अगर न हो तो सोख्ते गड्ढे की तैयारी हो।
नहीं रहे तो तुम कैसे, तन्दुरूस्त रहोगे भैयाजी।
गॉव की गलियॉ साफ रही तो .....।।
मकड़ी के जाले है भैया, आलस की पहचान बने।
मक्खी, मच्छर कीटाणु से, कैसे देश महान बनें।
मक्खी, मच्छर मर जाये तो मस्त रहोगे भैयाजी
गॉव की गलिया साफ रही तो .....।।

इस गीत पर मजीरे पर विशेष संगत स्वयं सरपंच श्री मोहन सिंह पटैल के द्वारा दी गई। गीत का असर हुआ और ग्रामवासियों में जागृति आई, और एक–एक करके ग्रामवासी सरपंच से जुड़ने लगे। रोज ग्राम में सरपंच के साथ एक दल निकलता जिसमें उपसरपंच श्री राजाराम पटैल, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता श्रीमति अनीता चौधरी, ग्राम के कुछ युवा व्यक्ति, ग्रामवासी बसोरीलाल मेहरा, ग्राम कोटवार शंकरलाल हमेशा साथ रहते।मुख्य बिंदु 1500/– रुपये में शौचालय का निर्माण करना था, सम्मेलन के दौरान तकनीकी विशेषज्ञ एवं गांव में प्रशिक्षित राजमिस्त्री द्वारा शौचालय निर्माण का तरीका एवं उसमें उपयोग की जाने वाली सामग्री की जानकारी दी गई, जिसमें 1200 रुपये बी.पी.एल. परिवारों को शासन द्वारा अनुदान एवं 300/– रुपये हितग्राही द्वारा व्यय करना था, गांव के सरपंच द्वारा शौचालय में लगने वाली सामग्री सामुहिक रूप से इकट्ठी क्रय की जिससे थोक रेट पर सामग्री मिलने से सस्ती मिली व अतिरिक्त सामग्री में जो परिवार अनुदान से वंचित थे, उनके भी शौचालय निर्मित कराये गये, एवं शौचालय निर्माण के बाद ऊपर की चारदीवारी व दरवाजा/परदा हितग्राहियों द्वारा स्थानीय उपलब्ध सामग्री द्वारा बनाकर कम खर्च में शौचालय निर्मित कर गांव को खुले में शौच से मुक्ति दिलाई एवं कुछ लोगों ने स्वयं के व्यय पर भी शौचालय का निर्माण कराया। ग्राम में जगह–जगह स्वच्छता नारे लिखवाये गये। सप्ताह में दो दिन ग्राम की चौपाल पर लोग एकत्रित होते एवं ग्राम को स्वच्छ व हराभरा करने की योजना बनाई जाती। ग्राम में शौचालय निर्माण का कार्य तीव्र गति से प्रारंभ होने लगा। लोग शौचालय बनवाने व उसका उपयोग करने लगे। पहले जहॉ ग्राम की बहु–बेटियॉ शौच के लिए बाहर जाया करती थी, अब केवल कुल बुजुर्ग व्यक्ति ही बाहर जाते थे, जिन्हें समझाना सरपंच के लिए टेढ़ी खीर के समान था। बुजर्ग के नाते वह कुछ बोल भी नहीं पाते थे। सर्वप्रथम सभी ग्रामवासियों के द्वारा शौचालय का निर्माण कराया गया व उसका उपयोग सुनिश्चित किया गया।पहले जहॉ कुछ लोगों के घरों में ही शौचालय थे आज संपूर्ण ग्राम के परिवारों के घरों में शौचालय निर्मित हुए है एवं ग्राम बाह्य शौच से मुक्त हैं। आज की स्थिति में ग्राम कल्याणपुर में 100 प्रतिशत लोग शौचालय का उपयोग कर रहे है। ग्राम के घरों पर एवं हैंडपंप के पानी की निकासी हेतु नाली निर्माण व सोखते गड्ढो का निर्माण किया गया गया है, ग्राम में एक सुंदर निर्मल वाटिका (कुटी) का निर्माण किया गया। ग्राम तारवाड़ी करके वृक्षारोपण किया गया, जिसमें सुंदर फूल–पौधे, फलदार वृक्ष लगाये गये हैं। ग्राम प्रवेश पर स्वागत गेट निर्मित

हैं। ग्राम के रास्तों पर हरे भरे पोधै लगे हैं। यह सब सरपंच श्री मोहन सिंह पटैल एवं ग्रामवासियों की एकजुटता एवं मेहनत का ही प्रयास हैं कि आज ग्राम कल्याणपुर एक सुंदर, स्वच्छ, निर्मल ग्राम हैं जिसने समग्र स्वच्छता अभियान के सभी घटकों को न केवल पूर्ण किया एवं उससे कही ज्यादा सुंदर व निर्मल बनाया यह कहना अतिशंयोक्ति नहीं होगी।

ग्राम के इस स्वच्छ वातावरण के लिए सरपंच श्री मोहन सिंह पटैल ने श्री मनीश सिंह जिला कलेक्टर नरसिंहपुर, श्री पी.एल. सोलंकी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, श्री राजेश तिवारी, जिला समन्वयक समग्र स्वच्छता अभियान, श्री मेहबूब खान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत नरसिंहपुर, एवं ग्रामवासियों का हृदय से आभार व्यक्त किया।

2 निर्मल ग्राम पंचायत चिल्लई जिला पंचायत होशंगाबाद

वर्ष 2006–07 में तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आजाद द्वारा "निर्मल ग्राम पुरस्कार" और इसी वर्ष में जिला प्रशासन द्वारा "स्वच्छ ग्राम पुरस्कार" भी इसी पंचायत को मिला। "चिल्लई" सामुदायिक गतिशीलता/सक्रियता का भी उदाहरण बन पड़ा हैं चिल्लई में जहां जनप्रतिनिधियों के माध्यम से निरंतर जनसंपर्क कर लोगों को प्रेरित किया जा रहा था, वहीं दूसरी ओर पंचायत ने सामाजिक निरीक्षण का कार्य भी जिम्मे लिया। पंचायत ने ऐसे परिवारों की सूची ग्रामपंचायत में नजरी नक्शे पर उतारकर बताना शुरू किया। समग्र स्वच्छता का उद्देश्य केवल शौचालय बनवाना नहीं, बल्कि समुदाय को स्वच्छता का पाठ पढ़ाना भी था, इस पर हमने बच्चों के साथ काम करना शुरू किया जिससे आगे चलकर ये पुष्प पल्लिवत होकर अपनी खुशबू से गांव को महकायें। हमने स्कूलों/आंगनवाडियों में बालक–बालिकाओं के लिये पृथक–पृथक शौचालय बनवाये। बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य, सुरक्षा व स्वच्छता संबंधी प्रशिक्षण देकर स्कूलों में स्वास्थ्य मंत्रियों की नियुक्ति की। स्वास्थ्य मंत्री यानी बच्चों के बीच का वह बच्चा, जो स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों को स्कूल स्तर के साथ–साथ गांव में भी प्रेरित करने का कार्य करे। आंगनवाडियों में भी हमने स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया। स्कूलों में एक कालखंड (पीरियड) स्वच्छता विशय पर आयोजित किया। वहीं पंचायत ने गांव के अनेक स्थलों पर सामुदायिक कूडेदान, पीकदान तथा पानी की निकासी की व्यवस्था की। जैविक खाद हेतु नाडेप बनवाये और वृक्षारोपण भी कराया। चिल्लई को निर्मल ग्राम बनाने में विभिन्न जन प्रतिनिधियों/ अधिकारियों का किसी ना किसी प्रकार से सहयोग प्राप्त हुआ, जैसे ग्राम के परिवारों हेतु पानी के डंके, साबुन, वृक्षों की सुरक्षा हेतु ट्री गार्ड निःशुल्क प्रदान किये गये। ऐसा नहीं कि निर्मल ग्राम के इस अभिनव प्रयास में महिलाओं की भूमिका नहीं है। परियोजना के शुरूआती दौर में ही गांव में महिलाओं का स्वसहायता समूह बनाया गया। इसके अलावा प्रत्येक वार्ड में स्वच्छता समितियों का गठन कराया गया। स्वच्छता समिति सदस्य लक्ष्मीबाई कहती हैं कि पहले तो हमने अपने घर में परिवारजनों को समझाईश देकर शौचालय बनवाया। फिर हमने

एक दिन में कम से कम दो घरों में मिलने का लक्ष्य रखा, हम अपना उदाहरण दे–देकर महिलाओं को प्रेरित कर करते थे, लक्ष्मीबाई कहती हैं कि होती भी क्यों नहीं? सबसे ज्यादा परेशानी भी तो हमें ही उठानी पड़ती है, मुंह अंधेरे, नजरें छिपाते, खेतों की ओर भागना पड़ता था। अब दिक्कत नहीं है, अब घर साफ, गांव साफ, पंचायत साफ और हम भी निरोग और सुरक्षित गांव का वही रामेश्वर, जो कुछ दिनों पूर्व तक मदिरा का सेवन करता था, साथ ही गांव में निर्मल गांव बनाने के प्रयासों को झूठा बताता था। ऐसे में गांववालों ने रामेश्वर का गांव में सम्मान कर उसे स्वच्छता समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया, इसके बाद रामेश्वर ने स्वपरिवर्तन करते हुये न केवल मदिरा का सेवन त्यागा, बल्कि गांव वालों को प्रेरित भी किया।

3 निर्मल ग्राम पंचायत छिन्दा, जनपद पंचायत परासिया जिला पंचायत–छिंदवाड़ा

श्री भादलाल भलावी सरपंच एवं श्री राजेश कुशवाह सचिव ग्राम पंचायत छिन्दा के नेतृत्व में ग्रामवासियों ने निर्मल ग्राम पंचायत का सुनहारा सपना देखा। इस ग्राम पंचायत में आदिवासी परिवारों की बहुतायत है एवं उक्त ग्राम पंचायत वेस्र्टन कोल फील्ड लिमिटेड के कार्य क्षेत्रन्तार्गत आती है। प्रारम्भ में ग्रामवासियों को खुले में शौच करने की आदत से मुक्त कराने में समस्याए आई और ग्रामवासियों द्वारा जमकर विरोध किया गया।अभियान अन्तर्गत प्रयासों का श्रीगणेश प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा श्री रामप्रकाश अहिरवार अनुविभागीय अधिकारी परासिया, श्री ओंकार सिंह ठाकुर मुख्य कार्यपालन अधिकारी, श्री रमेशचंद्र चौधरी विकासण्ड अधिकारी जनपद पंचायत परासिया, श्री सुधीर कृशक जिला समन्वयक समग्र स्वच्छता अभियान एवं सरपंच–सचिव ग्राम पंचायत छिन्दा के अथक प्रयासों एवं बार–बार भ्रमण कर समग्र स्वच्छता अभियान के प्रचार–प्रसार से ग्रामवासियों में जिज्ञासा के साथ ज्ञान का संचार हुआ।ग्राम पंचायत द्वारा निर्मल ग्राम हेतु की गई कार्यवाही ग्राम में समग्र स्वच्छता अभियान का व्यापक प्रचार–प्रसार किया गया, इस हेतु नुक्कड़, रैली, पोस्टर और सभाओं के माध्यम से लोगो को खुले में शौच करने के दुष्परिणामों से अवगत कराया गया। उन्हें इस कारण खुले में शौच करना ही हैं। ग्राम जल स्वच्छता समिति की सदस्य महिलाओं में इन बातों से जागरूकता आई और व अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए शौचालय बनवाने के लिए संकल्प के साथ आगे आई। सचिव श्री राजेश कुशवाहा ने योजनान्तर्गत अनुदान की मदद से ग्राम के समस्त बी.पी.एल. परिवारों में शौचालयों का निर्माण कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान किया गया एवं अनेक परिवारों को निर्मल वाटिका योजना के तहत् शौचालय निर्माण करवाकर फलदार पौध रोपण करवाया गया।अभियान के सुचारू संचालन हेतु ग्राम पंचायत द्वारा किये गये प्रयास शौचालय निर्माण करवाने के पश्चात् सरपंच,सचिव ग्राम पंचायत छिन्दा ग्राम के बच्चों, वी.डब्ल्यु.एस.सी. की मदद से निगरानी समिति का गठन किया गया जो यह देखते हैं कि ग्राम में कोई भी व्यक्ति खुले में शौच तो नहीं जा रहा है। कुछ उद्दण्ड व्यक्तियों के द्वारा बच्चों की बात न मानने पर सचिव श्री राजेश कुशवाहा आगें आये और उन्होंने खुल में शौच जाते व्यक्तियों को समझाईश देते हुए समिति द्वारा बनाये गये नियमों का

कड़ाई से पालन करने की हिदायत दी। निगरानी समिति द्वारा समग्र स्वच्छता अभियान अन्तर्गत निर्मल ग्राम पंचायत को साकार रूप देने के लिए ग्राम पंचायत के क्षेत्रान्तर्गत पोस्टर लगवाये गये कि जो भी व्यक्ति खुले में शौच जाएगा, पकड़े जाने पर उसे 50रूपये दण्ड स्वरूप जुर्माना जमा करना होगा। इस प्रकार किये गये प्रयत्नों से ग्राम के समस्त बी0पी0एल0 एवं ए0पी0एल0 परिवारों मे शौचालय का निर्माण करवाकर उनका उपयोग संबंधित परिवारों द्वारा किया जाना सुनिश्चित किया गया। ग्राम में कचराघर एवं नाडेप की व्यवस्था की गई। स्कूल एवं आंगनवाड़ी में शारीरिक स्वच्छता एवं नाडेप की व्यवस्था की एवं घर के आसपास की सुरक्षा का पाठ पढ़ाये जाने से ग्रामवासियों द्वारा इसे व्यवहार रूप में ग्रहण किया गया है।

4 निर्मल ग्राम पंयायत मलारी जिला पंचायत – सिवनी

जनपद पंचायत केवलारी की समग्र स्वच्छता अभियान की बैठक जनपद प्रमुख एवं जिला प्रमुख के सुझाव से शुरू हुई समग्र स्वच्छता अभियान की बैठक में जो सुझाव सरपंच /सचिव को दिया गया उसका प्रचार–प्रसार ग्राम पंचायत के आश्रित दोनो ग्राम पौण्डी एवं मलारी में ग्राम सभाओं का आयोजन कराया गया जिसमें श्री एस. डी.एम.महोदय के केवलारी की उपस्थिति में ग्रामीण जनों को समग्र स्वच्छता के तहत जानकारी दी गई एवं जन सहयोग की बातें कही गई,जिसमें बी.पी.एल.परिवारो को शासन से बारह सौ रूपये की राशि शौचालय के निर्माण हेतु प्रदाय की गई एवं आठ सौ रूपये की राशि जल सहयोग से प्राप्त कर प्रत्येक बी.पी.एल.परिवारो के घरों में शौचालय का निर्माण किया गया। उसी प्रकार ए.पी.एल. परिवारो से दौ हजार रूपये का जन सहयेाग प्राप्त कर सभी परिवारो (ए.पी.एल)के निवासो पर शौचालय का निर्माण कर कराया एवं सभी लोगो से मिलकर शौचालय उपयोग प्रारंभ कर दिया इसी प्रकार ग्रामों की समस्त गलियों में साफ–सफाई एवं गलियो के समस्त चौराहो पर मुत्रालयों एवं कूडादान बनायें गयें घरों से निकलने वाला कचरा कूडा दानो में डाल दिया जाता है।इस प्रकार निर्मल ग्राम बनाने में समस्त ग्राम वासियों एवं अधिकारी कर्मचारियों कें सहयोग एवं मार्ग दर्शन से निर्मल ग्राम बनाने में ग्राम पंचायत मलारी सफल हो चुकी एव 26 जनवरी 2009 को सिवनी स्टेडियम ग्राउंड में केवलारी विद्यान सभा के विद्यायक महोदय एवं कलेक्टर महोदय द्वारा सरपंच /सचिव को समझाइस किया गया।ग्राम पंचायत मलारी द्वारा पानी की आपूर्ती को ध्यान में रखते हुए तालाब निर्माण कार्य एवं फार्म पौण्ड का निर्माण एवं कपिल धारा योजना से कृषको से खेतों में कुऐं निर्माण एवं सार्वजनिक कूपों का निर्माण कराया गया एवं ग्राम में सामुदायिक स्वस्थ्य उपकेन्द्र का निर्माण कराया गया आंगनवाडी भवन का निर्माण कराया गया एवं जल आपूर्ती को ध्यान में रखतें हुये ग्राम मलारी में वैर करवाकर पाईप लाईन का विस्तार कर जल की आपूर्ती की गई एवं ग्राम पौण्डी से बैंनगंगा पुल को जोड कर ग्राम पंचायत मलारी को बालाघाट, मंण्डला बैहर एवं परसवाडा से जोड कर ग्राम पंचायत मलारी की सराहना की जा रही है। एवं ग्राम से खेत पहुच एवं कई अन्य रोडो का निर्माण कराया गया एवं आदिवासी,हरिजन एवं पिछडा बी.पी.एल.परिवारो के कृषको के खेतो में मेंढ बंधान कार्य

कराया गया जिसमे कृषकों को लाभान्वित किया गया।ग्राम पंचायत मलारी के द्वारा अन्य योजनाओं द्वारा लाभान्वित किया गया जिसमें ग्राम पंचायत मलारी का समस्त जन समुदाय आन्नदम है। विक्रम ने जैसे ही पहले दिन बेताल की कहानी का उत्तर दिया। बेताल उडकर पेड में गायब हो गया। दूसरे दिन जैसे ही विक्रम अपने महल को जाने के लिए तत्पर हुआ, तो बूताल पेड से कुदकर विक्रम इस अप्रत्याशित हमले के लिए पहले से तैसार न था, फिर भी उसने अपान बीरता का प्रदर्शन करते हुए बेताल पर काबू पा ही लिया, ओर नियम के अनुसार बूताल विक्रम की पीठ पर सवार हो गया। विक्रम से बेताल बोला कि आज फिर नई कहानी सुनोगे? हो सुनेगें? विक्रम बोला। हां परन्तु कहानी के अंत में जो इस प्रश्न करूंगा। इसका उत्तर भी तुम्हे सोच–समझकर देना होगा। क्या तेरे सिर के टुकडे– टुकडे हो जाऐगे। बेताल ने विक्रम से बोला। अब बेताल कहानी बताना प्रारंभ करते हुए बोला–किसी गांव में दो बहने रहती थी– उनमें से बडी बहन का नाम सुखवती था,जो कि बचपन से की आलस्य की मूर्ति थी। इन दोनों के इन विपरीत गुणों के कारण हीउनका नाम सुखवती और गुणवती रखा गया। जब सुखवती बडी हुई तो उसके गुणों के अनुरूप उसका विवाह बडे एवं प्रतिष्ठित घराने में किया गया। ताकि उसके सुख में कोई भी कमी न हो। गुणवती इसे ही अपना भाग्य समझ और अपने गुणों के सहारे सुखपूर्ण जीवन जीने लगी। गुणवती के घर के पास स्थित कुएं के पास गंदा पानी जमा होता था, जिससे मच्छर होते थे तथा कुएं का पानी भी दूषित हो रहा था, गुणवती ने अपने पडोसियों को समझाया कि गंदा पानी जमा न होने के हमें उपाय करने होगें नही तो गांव में बीमारी फैल जाएगी। गुणवती की बात को सभी ने स्वीकार करते हुए गांव में गंदे पानी की निकासी के लिए एक नाली का निर्माण किया। जिससे गंदा पानी नाली के रास्ते गांव से बाहर बह जाता था एवं मच्छर का प्रकोप भी कम हो गया, साथ हीं साथ कुएं का पानी भी स्वच्छ रहने लगा। इससे सभी ग्रामवासियों ने गुणवती की सूझ–बूझ की पूरी–पूरी प्रशंसा की। गुणवती रोज शाम को पडोस से नीम के पेड की पत्तियां लाकर जलाकर धुंआ करती थी, जिससे मच्छर नहीं होते थे। गुणवती के बच्चे भी समझदार थे, वे स्वच्छता का महत्व समझते थे। उसके छोटे से घर में गंदगी बिलकुल ना थी। बच्चे खाने से पहले एवं शौच के बाद उपने हाथ साबुन एवं राख से धोते थे, और मां से नाखुन भी कटवाते थें गुणवती ने अपने घर में एक कच्चा शौचालय भी बनवा लिया था, जिसे वह बाहर शौाच नही जाती थी। गुणवती ने यही समझाइस सभी ग्रामवासियों को दी जिससे पूरे गांव ने मिलकर इस संबंध में ग्राम पंचायत के सरपंच एवं सचिव से संपर्क कर ग्राम में शौचालय निर्माण हेतु बात रखी । जब ग्राम पंचायत के सरपंच – सचिव ने उन्हे समग्र स्वच्छता अभियान की जानकारी दी एवं ग्राम को समग्र स्वच्छता अभियान के उद्देश्यों में शामिल कर लिया गया , जिससे वे ग्राम वासी जो अपने घर में शौचालय निर्माण करने में असमर्थ थे उनके घरों में पक्के शौचालयों का निर्माण कराया गया एवं ग्राम को निर्मल ग्राम भी घेषित कर दिया गया इस तरह गुणवती ने अपने गांव एवं ग्रामवासियों को अपनी सूझबूझ से स्वच्छ जीवन जीने के लिए प्रेरित किया और सभी ग्रामवासियों को अनेको बीमारियों से बचाया। दूसरी और सुखवती इतने बडे घर में रहते हुए खाना खाकर सोती रहती नो बच्चों कीसाफ सफाई का